Unique paper code: 12277503

Name of the paper: Economic History of India (1857 – 1947)

Name of the course: B.A. (Hons.) Economics (CBCS – LOCF), DSE

Semester: V

Maximum Marks: 75

Time: 3 hours

Instructions for Candidates

1. Answer **any 4** questions.
2. All questions carry equal marks.
3. Answers may be written either in English or in Hindi, but the same medium should be used throughout the paper.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिये |
2. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं |
3. प्रश्न का उत्तर हिंदी अथवा अंग्रेजी माध्यम में लिखा जा सकता है परन्तु सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही माध्यम में होना चाहिए |

Q 1. “There were significant limits on the growth and development of new manufacturing enterprises, the most critical being the policies of the English East India Company state, which ruled India until 1858.” Examine the potential for modern industry during the early colonial period in India in the light of the above statement.

"नए विनिर्माण उद्यमों के वृद्धि एवं विकास की महत्वपूर्ण सीमाएं थीं, इनमें से सबसे विकट अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी राज्य की नीतियां थीं, जिसने 1858 तक भारत पर शासन किया था।" उपर्युक्त कथन के सन्दर्भ में भारत में प्रारंभिक औपनिवेशिक काल के अंतर्गत आधुनिक उद्योग की संभावनाओं का परीक्षण कीजिए।

Q 2.: What are the main causes of the rapid increase in the Indian population after 1921? Do you agree with Sumit Guha’s contention that weather conditions had an important role to play in it? Explain.

1921 के बाद भारतीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि के मुख्य कारण क्या हैं? क्या आप सुमित गुहा के इस तर्क से सहमत हैं कि इसमें मौसम की स्थिति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है? व्याख्या करें।

Q 3. “The development of Indian famine policy, then, illustrated the rapid advance of the raw capacity to control famine related deaths, and the slower, more erratic advance of humanitarianism and social concern.” In the light of this statement, analyze the Indian famine policy and its implementation in colonial India.

"भारतीय अकाल नीति का विकास एक ओर अकाल-जनित मृत्यु को नियंत्रित करने की क्षमता का तीव्र गति से विकास चित्रित करता है, तो दूसरी ओर मानवतावाद एवं सामाजिक सरोकार की धीमी तथा अनियमित प्रगति को ।" इस कथन के सन्दर्भ में, भारतीय अकाल नीति तथा औपनिवेशिक भारत में इसके कार्यान्वयन का विश्लेषण कीजिए।

Q 4. It is often argued that railways failed to promote growth and development in colonial India. How far do you think this is correct? In this context, discuss the role of government ownership and policies.

अकसर यह तर्क दिया जाता है कि औपनिवेशिक भारत में वृद्धि एवं विकास को बढ़ावा देने में रेलवे विफल रहा। आप इसे कहाँ तक सही मानते हैं? इस संदर्भ में सरकारी स्वामित्व एवं नीतियों की भूमिका पर चर्चा करें।

Q 5. The process of de-industrialization during the colonial period is often judged through the lens of upheaval in Indian textiles production and its markets both domestic and foreign. Do you agree with this viewpoint? Examine critically.

औपनिवेशिक काल में विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया को अकसर भारतीय कपड़ा उद्योग के उत्पादन तथा उसके घरेलू एवं विदेशी बाजारों में होने वाले उतार चढ़ाव के माध्यम से आंका जाता है। क्या आप सहमत हैं? आलोचनात्मक जांच करें।

Q 6. ‘One of the criticisms of the British rule in India was the “drain of wealth”, which enriched Britain while removing from India resources that might have been used to drive modernization of India.’ Examine the above statement critically, bringing out arguments on both side of the debate.

‘भारत में ब्रिटिश शासन की आलोचनाओं में से एक "धन की निकासी" थी, जिसने भारत के उन संसाधनों का उपयोग ब्रिटेन को समृद्ध करने में किया, जिनका उपयोग भारत के आधुनीकरण के लिए किया जा सकता था’। उपरोक्त कथन का समालोचनात्मक परीक्षण करें, दोनों पक्षों के तर्कों को सामने रखते हुए चर्चा करें।